CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

हिन्दी कहानियों में स्त्री विमर्श

डॉ. नारायण, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति

Received: 02/03/2018	Edited: 07/03/2018	Accepted: 12/03/2018

सारांश: *भारतीय समाज में बहुत पहले से पश्चिम देशों की तुलना में आदिक महिलाऐ पुरुष शोषित रही है। लेकिन अब वह धीरे-धीरे अपनी शक्ति की पहचान और अपनी सुझ-बुझ एवं बुध्दिमत्ता से देश की प्रगती में शामिल हो रही है। वह भी पुरुषों के बराबर कामकाज के लिए तयार हो रही है। आज की महला कृषी से लेकर वैज्ञानिक एवं तकनीक सभी क्षेत्र में अपनी क्षमा-शक्ति को बढा रही है। लेकिन आज भी लिखि-पढी, काम काजि महलाओं पर अमानवीय व्यावहार किया जा रहा है। इसके विरोध कें लिए महलाए संघर्ष कर रही है। इस संघर्ष में पुरुषों को भी साथ देने की अवश्यकता है।*

बीज शब्द: *स्त्री, कहानियाँ, हिन्दी कहानियाँ, स्त्री शक्ती।*

सांसारिक जीवन में महिला का विशेष महत्व है।

नारी विहीन गृहम न उच्यते।

नारी विहीन गृहम अरण्य सदृश्य भवति।

स्त्री के बिना घर नही होता महिला के बिना घर जंगल के समान सुना होता है। किसी का वंश नहीं चलता संसार में बिना महिला के। डॉ. अम्बेडकर अपने भाषण में कहा था कि "किसी देश का विकास उस देश की स्त्रियों के विकास से आंका जाता है। महिला साक्षात शक्ती है। वह सौंदर्य, दया, ममता, भावना, संवेदना, करुणा, क्षमा, वात्सल्य, त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति है। इन महान गुणों से निहीत महिलाओं को देवी कहा गया है । अत: जहां नारियों का मान-सम्मान होता है। वह देवताओं का वास होता है । वैदिक काल में महिलाओं का जीवन, अधिक उन्नत था। ऋवेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रह्मा के स्थान को ग्रहण करने योग्य माना गया था। रामायण, महाभारत में के समय महिलाओं को विदूषियों के रुप अल्प और गृहस्वामिनी के रुप में अधिक माना गया है। इस प्रकार देखा जाये तो नारी के जीवन में अतार-चढाव के साथ-संर्घषय यात्रा को झेलते आ रही है। पश्चिमी विद्धान शापेन हावर अपनी पुस्तक Essay on Woman में लिखते है कि "Instead of calling the no beautiful there world be a more warrant for describings woman as the unacsthetic sex ... the most distinguished intellect among the whole, sex then ... managed to produce a single achievement in the five arts that is really genuine and original or give to the world any work of permanent value in any sphere."

लेकिन भारतीय समाज में बहुत पहले से ही पश्चिम के देशों की तुलना में अधिक पुरुष शोषित समाज माना गया। आधुनिक नारीवाद के विकास का आरंभ १९४६ में प्रकाशित सियोन द बोउवार की कृती "*The second sex*" को माना जाता है। लेकिन इससे पूर्व अमेरिका कृति के दौरान अबिगेल एडम्स और मर्सी वारेन के नेतृत्व में, उस के उपरांत फ्रासीसी कांति के समय ओलिम्प द गोउजेस द्वारा १७९१ में नारीवाद का सुत्रपात हो चुका था। इस प्रकार के अनेक सशक्त आंदोलन भारत में भी मुक्ति के लिए संघर्ष किये गये। फिर भी यदि आज की नारी की चर्चा की जाये तो वह पूर्ण रुप से स्वतंत्र नहीं हो पायी है। इस दिशा में भारतीय नारी को जागरुक की जरुरत है। आधुनिक महिलाएँ ऊपरी तौर पर काफी विकास की ओर पहुंची है, लेकिन जितने पडाव पुरे होने चाहिए थे उतने नहीं हो पाये है। महिलाओं का उपरी परिवर्तन यह है कि वह पुरुष के बराबर जीवने अनेक क्षेत्रों में कार्यरत होना चाहती है। वह पुरुष समान दिखाई भी देती है । लेकिन भीतर झांकर देखने पर उन्हें दिन भर पुरुष के समान काम कर, पारिवारिक दायित्व को भी निभाना पढता है । इस संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा जी कहती है कि "पुरुष के लिए सबसे बडी चुनौती स्त्री ही है। उसको वश में करने के लिए वह जिंदगी भर न जाने कितने प्रयास करता है कि किसी तरह औरत के बजूद को तोड सके" आज की आधुनिक भौतिकवाद प्रधान युग की महिला को सबसे बडा दु:ख यह है कि वह पुरुष के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाकर भी उसके हृदय

की श्रध्दा की पात्रा नहीं बन पाई है। उसके बलिदान को पुरुष ने दुर्बलता के अतिरिक्त कुछ ओर समझने का प्रयत्न नहीं किया। अपने सभी सम्मानों और सफलताओं के बाबचूद भी जलील की जाती रही है ।

लेकिन अब वह धीरे-धीरे अपनी शक्ति को पहचाना और अपनी सुझ-बुझ एवं बुध्दिमता से देश की प्रगती में शामिल हो रही है। वह भी पुरुषों के बरा-बर कामकाज के लिए तयार हो रही है। परिवार में महिलाए, बहन, पत्नी, फीर माँ, बनकर सारे घरेलु कामकाज करती है। पुरुष वर्ग सिर्फ दो वक्त की रोटी और पहनने के लिए कपडे देकर अपने कर्तव्यों की पूर्ति करता है। लेकिन महिलाओं के प्रति उनका रवैया सहानुभूतिपूर्ण नहीं होता है। कुछ परिवारों में पुरुष थोड़ा बहुत घरेलु कार्य में हाथ बंटाते है । इसे अपवाद स्वरुप ही माना जायेगा।

आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ महिला में काम न करती हों कृषि से लेकर वैज्ञानिक एवं तकनीक सभी क्षेत्रों में महिलाओं की क्षमा-शक्ति को देखा-परखा जा सकता है। कृषि में खेतीहर मजदूरों के रुप में एवं जंगली उत्पानद इकट्ठा करने में महिलाओं का विशेष योगदान है।

महिला श्रमिकों के अतिरिक्त शासकीय कार्यालयों, निजी कार्यालयों प्राईवेट फर्म, महाविद्यालय, विद्यालयों में काम करने वाली पढी-लिखी महिलायें भी शोषण का शिकार है । क्लर्क से लेकर अधिकारी वर्ग तक महिलाओं से अधिक काम लेते हैं। प्राईवेट फार्मस् के मालिक स्टेनों पर अपना अधिकार समझते हैं। उन्हें जरुरी मीटिंग या जरुरी लेटर टाईप की बात कहकर देर रात तक रोककर रखते है। फिर उन्हें घर छोडने के बहाने कार में अपने नजदीक बैठाकर उनसे अश्लील व्यवहार करते है। उनके हाथों में फाईल या शासकीय पत्र इस प्रकार पकडाए जाते हैं कि उनके हाथों स्पर्श हो। उनके प्रमोशन भी कुछ शर्तों पर निर्भर होते है।

कामकाजी महिला को पुरुष प्रधान समाज में पुरुष की कामलोलुप दृष्टि, व्यंग-बाण, कटाक्षों से लेकर अपने शरीर को कृथ करने तक के जो प्रस्ताव सहने पडते हैं, उनको नाराज न करने की मजबूरों में उनके द्वारा दिये गये उपहास आदि को भी हसते-हसते झेलना पढता है। इस लिए आज लिखी पढी महिलाए स्वावलंबन रखती है। इसका मिशाल राजी सेठ की कहानी "मेरे लिए नहीं " में देखा जा सकता है। इस कहानी की नायीका प्रीती पढ-लिख अपनी प्रतिभा के बल पर उच्छ पद प्राप्त करती है। वह हर तरह का स्वावलंबन रखती है। वह किसी परवाह नहीं करती है। वह परम्पराओं, पारिवारिक संबंधों और अन्य ऐसी स्थापित धारणाओं से मुक्त है। वह सभी बंधनों, प्रेम जैसे नितांत निजी मामलों, या पत्नी बनने आदि विषयों से मुक्त हो जाती है। वह कहती है कि अयाम मेड डिफरेंटली . . मैं अपने को अच्छी तरह जानती हूँ। मुझ से वह नहीं निभा सकता . . . खाने का सवाल सब से बाद में . . . बाथरुम का इस्तेमाल सब से बाद में . . . खाने की छुट्टी सब से पीछे। . . . पत्नी . . . जिसे "पत्नी" कहत हो, तुम सब लोग, वह मैं भी नहीं हो सकती . . . मेरे अंदर दूसरों को उस हद तक झेलने का मुद्दा नहीं है। वह किसी के साथ किसी भी रुम में जुडे रहने को मानता ही नहीं है।" इसी प्रकार मेहरुन्निसा परवेज की "विद्रोह" कहानी में अवि वाहित कामकाजी नारी के संबंध में चित्रित किया है। इस कहानी की नीना भी सभी लडकियों की भांति अविवाहित होकर अपनी जिंदगी बिताना चाहती है। लेकिन घर की आर्थिक स्थिति उसे नौकरी करने के लिए जिम्मेदार बनाती है। इस सभ्य समाज की नारी अपनी समस्त कामनाओं को बनाने के लिए मजबूर होती हैं। नीना अपने मात-पिता के गैर जिम्मेदार रवैया के खिलाफ विद्रोह करना चाहती है। लेकिन वह स्वंय अपने आपकों संभालने लगती है।

महिलाओं के जीवन में नगर एक प्रमुख अंश बन गया है। भूमंडलीकरण, बाजीरीकरण, औद्यागिकरण के कारण। नगर में रहना बहु आयामी बन गया है।

यात्रों का निर्माण करने वाला व्यक्ति स्वंय यंत्र बन गया है। कारखाने, कार्यालय, सडक से लेकर रसोई घर यंत्र का प्रभाव मानव के अस्तित्व पर छा गया है। आत्मीयता सहज मानवीय संवेदना का स्थान उत्तेजना, तनाव, स्वार्थ और अकेलेपन ने लिया है। चाहे वह कोई भी नगर क्यों न हो एक दूसरे के संबंध लाभ के कारण होते है। यदि किसी से कोई लाभ न हो तो उनके रिस्ते बिगड जात है। यह आधुनिकता नगर जीवन की अनिवार्य शर्त है। नगर का पुरुष नये ढंग से सोचने और उनको अपनी सुविधा के अनुरुप नये रुप में अपनाने की कोशिश करता है। नारीवादी कहानिकारों की कहानियों में नगर जीवन की इस विशेषता के अनुरुप स्त्री-पुरुष संबंधो को प्रस्तुत करने की विशेषता देखी जा सकती है। आधुनिकता के व्यामोह में संबंधो के बिलकुल ठुकराने या उन्मुक्त व्यवहार करने की प्रवृत्ति इन कहानियों में नहीं देखो जाती है। अपनी सुविधा और आवश्यकता के अनुसार संबंधो को बदले हुए रुप में अपनाने की पध्दति देखी जाती। अत: नगर जीवन की गतिविधियों और सुविधाओं से सापेक्ष्य में ही स्त्री-पुरुष संबन्धों का चित्रण उषा जी, राजी सेठ, मेहरुन्निसा परवेज, मन्नु भंडारी की कहानियों में किया गया है।

भौतिकवादी सभ्यता से इस आधुनिक युग में स्त्री और पुरुष के ऐसे यौन संबंध ज्यादा देखने को मिलते है। इसके अलावा समाज

में नारी की औसत स्थिति भी यौन संबंधो के स्थापन का महत्वपूर्ण कारण है। नारी के लिए एक पुरुष का होना जितना अवश्य है उतना ही पुरुष के लिए नारी का होना भी उतना ही अवश्य होता है। लेकिन वर्तमान युग में सेक्स जानकारी के स्त्रोत अधिक होने के कारण अवैध संबपंध अधिक होने लगे है। जैसे टेलिविजन, पत्र-पत्रिकाएं और सिनेमा। आज टेलिविजन चनलों अंतर्जाल से अश्लील कार्यक्रम परोसे जा रहे है। सिनेमा में सेक्सी मानों की भरमार हो गई है। पत्र-पत्रिकाओं में अर्धनग्न महिलाओं की अश्लील तस्वीरें छापी जा रही है। इस प्रकार सेक्स की सामग्रिया प्रस्तुती के कारण पुरुष और महिलाओं में काम की भावना अधिक होने लगी है। विशेषकर किशोर सबसे अधिक प्रभावित हो रहे है। इतना ही नहीं वैवाहिक पति-पत्नी के अवैध संबंध भी बड रहे है। इसका मिशाल उषा प्रियंवदा की "दो अंधेर" कहानी में देख्र सकते है। इस कहानी का पुरुष पात्र दिनेश शीलवती पत्नी और बच्चों के रहते हुए भी कंवल से यौन संबंध स्थापित करता है। यह उसकी भौतिक भोगवादी प्रवृत्ति का सूचक है। जब उसकी पत्नी को यह पता चलता है तब वह संवेदनाशून्य पति से परेशान हो जाती है। और उससे कटकर जीने लगती है। लेख्रिका की कहानी "सागर पार का संगीत" में कहानी का पुरुष पात्र औस्कार अपने कार्यों से हमेशा व्यस्त रहता है। उसकी पत्नी देवयानी पति के साथ अधिक रहना चाहती है। वह अपने पति से काम संबंधों की उत्कट चाह रख्रती है। औस्कार को एक कान्फ्रेन्स डेट्रसेर जाना पडता है। वह उसे जाने के लिए माना भी करती है। पति नहीं मानता है इससे देवयानी नाराज होती है। और अपनी कामनाओं को पुरी करने के लिए पति के चचेरा भाई यास्पर से यौन संबपंध स्थापित करती है।

हमारे देश में स्वतंत्र से लेकर आज तक बाल विवाह की पध्दती कायम है। इस से छोटी उम्र में ही पत्नी विधवा बनकर अधूरा जीवन जीने के विवश होती है। इस के उपरांत उम्र की अनमोल समस्या उत्पन्न होती है। छोटी उम्र में ही १४-१५ वर्ष के आयुवाले पुरुष से महिलाओं का विवाह होता है। इस स्थिति में पत्नी-पती से पूर्ण रुप से मिल नहीं पाती और इस अनमेल के कारण दांपत्य जीवन का सुख्र नहीं ले पाते हैं। इससे उनके जीवन में तनाव और कुंठा उत्पन्न हो जाती है।

इसका मिशाल नारीवादी कहानीकारों की अनेक कहानियों में चित्रित हुआ है। कुलदीप बग्गा की कहानी "उमस" के राज और उसके पति के बीच आयु का अंतर पंद्रह वर्ष से आर्थिक है। राज को अपने माता-पिता की मजबूरियों के कारण १९ वर्ष की उम्र में ही बी.ए की पढाई छोडकर पैंतीस वर्ष के पुरुष के साथ विवाह करना पडता है। राज को हमेशा बाते करना, उछलते रहना पसंद नहीं रहता है, और अपने पति द्वारा होमियों पथि की किताबें पढना आदि पसंद कही करती है। अनमेल उम्र के कारण दोनों के विचारों में भी अधिक अंतर होने के कारण राज पति का भांजा सुरेश जो राज का हम उम्र का होता है। से मिठता बढाने लगती है। राज के पति को यह सब पसंद नहीं आता है। वह राज से कहता है कि "मेरे पीछे इस घर में कोई नहीं आना चाहिए।" इसी प्रकार नफीस आफरीदी की "दौड" कहानी में कहानी में भीमा ५० वर्ष की आयु में जोगना से चौथा विवाह करता है। दोनों की आयु में लग-भग २० वर्ष का अंतर होता है। भीमाकाछी की पलियां उसे एक के के बाद एक छोड जाती है क्यों कि वह पुसंत्वहीन था। जोगना अनुभव करती है कि "ऐसी बलिष्ट देह और भीदतर का यह ख्राली पन ताल-मेल बैठाती, तो बुरी तरह सिर चकराने लगता। वह चौथे चने-सा बज रहा था। चिंचोड ने भभोडने पर भी कुछ नहीं बनता तब झुंझलाकर अंधे सापं की तरह बलख्राने और फुंफकारने लगता।" इस प्रकार अनमेल की स्थिति में दोनों में व्याकुलता बढने लगती है। इस से घर में रोज झगडा, मार-पीट शुरु हो जाता है। समाज में सदियों पुरुष का ही वर्चस्व रहा है। क्यों कि आज कुछ अपवादों को छोडकर, लडका ही लडकों पसंद करता है लैकिन लडकी से ये नहीं पूछा जाती की लडकी को लडका पसंद है, या नहीं, हमारे समाज में लडके के इच्छानुसार अधिक विवाह होते है। यदि कभी कभार माता-पिता के इच्छानुसार लडके का विवाह हो जाता है। तो उनके अनिच्छा का दण्ड लडकी (पत्नी) को भोगना पडता है। इसका मिशाल कमलेश्वर की कहानी "ऊपर उठता मकान" में देख्रा जा सकता है। इस कहानी का पुरुष पात्र मुरारीबाबू को गौरी के साथ विवाह पसंद नहीं होता है। वह अपने माता-पिता के दबाव के कारण गौरी से विवाह कर लेता है। इसी लिए वह अपनी पत्नी के साथ अमानवीय, निर्मम व्यवहार करन लगता है, और अपना बहुमुल्य समय सतवंती के साथ बिताने लगता है। इससे पति पत्नी में अनबन होने लगती है। इसी असंतोष को अपने माता-पिता के समीप रख्रते हुए कहता है कि "मेरी शादी आप लोगों ने अपनी मर्जी से की है, तो उसकी जिम्मेदारी भी उठाइए। मेरे लिए यह कताई मुमकिन नहीं है कि यहाँ उसके साथ घर-गृहस्थी जमा सकू।"

इस प्रकार के पति के व्यवहार से तंग आकर अपने बेटे के साथ चलि तो जाती है। लेकिन कुछ दिनों के बाद लौटकर असे अपने पति के साथ समझौता करना पडता है।

इतना ही नहीं हमारे समाज में आर्थिक तंगी के कारण लाख्रों की संख्या में दांपत्य जीवन टूटने के कगार पर ख्रडे है। भूमंडलीकर के इस युग में आर्थिक सुधार के दौड में अच्छे-ख्रासे परिवार भी आर्थिक

तंगी से त्रस्त हो रहे है। इस का प्रभाव दांपत्य जीवन पर पड रहा है। पैसे कमाने के लिए कभी पति को पत्नी से तो कभी पत्नी को पति से अपनों से दूर रहना पडता है। इस से अधिक घर का भार "पत्नी पर ही पडता है। इससे दोनों में अनबन उत्पन्न हो जाती है और कयी बार अपने दांपत्य इच्छाओं से समझौता करना पडता है। इसका उदाहरण शांन्ती की कहानी "एक कमरे का घर" में देखा जा सकता है। इस कहानी में दंपति एहसान और उसकी पत्नी दोनों आर्थिक तंगी के कारण तनाव को झेलते है। ऐहसान अपनी नौकरी के कारण एक महीने में २७ दिन दौरे पर रहता है, वह अपनी अल्प अमदानी के कारण परिवार के साथ एक कमरे के घर में बसेरा करता है। नौकरी के कारण दोनों पति-पत्नी रात के बहूत देर बाद भीं नहीं मिल पाते है। इस लिए उनका मानसिक संतुल बिगडने लगता है। ऐसी स्थिति में पत्नी अपना दूखडे को व्यक्त करते हुए पति से कहती है कि "तुम्हारा क्या है? इधर से आ उधर से चल गये। जो महीने में पच्छीस-सताईस दिन बाहर रहे और मुश्किल से दो-एक दिन घर पर बिताए उसका घर कहा हुआ. घर या बाहर? फिर भी एहसान कुछ नहीं करता और कहता।" इस प्रकार सुभाष पंत की "दो धरोतलों के बीच" कहानी का पुरुष पात्र आर्थिक तंगी के कारण कामकाजी पत्नी के अवैध संबंध को झेलता है। तो गोविंद मिश्रा की "उल्मापात" और स्नेह मोहनीश की "अनगत समय" कहानियों के दंपति आर्थिक तंगी के कारण मजबूरन अधिक समय एक-दुसरे से दूर ही बिताते है।

निष्कर्ष :

इस से जहीर होता है कि देश की गुलामी के पीछे समाज में फैली कुरीतियां है। इन्ही कुरीतियों के पीछे नारी की स्थिति और अशिक्षा है। लेकिन हमें मानना होगा की नारी बिना-पुरुष नहीं और पुरुष बिना नारी का जीवन आधुरा होता है। इस में भेद भाव नहीं करना चाहिए। अत: महिला-पुरुष के इन्सान होने में कोई विभक्ति या कोई संधी विच्छेद नहीं रखना चाहिए। समाज में नारी को पुरुष के समान सम्मान और दर्जा प्राप्त होने चाहिए। समाज के लिखे पढे युवती-युवकों से हम आशा रखते है की आने वाली सद्दी में पुरुषों व महिलाओं की मानसिकता में परिवर्तन आए। और समान रुप से अपने परिवार को रथ के पैयों की तरह चलाए। तभी मानवीय मूल्यों का पालन होगा। इस लिए मैत्रेयी पुष्पा के इन शब्दों से सहमत होना चाहिए कि "आनेवाली सदी की मांग है कि पुरुष मानसिकता में परिवर्तन आए और वह बेझिझक किसी भी आशंका और असुरक्षा से मुक्त होकर आती हुई स्त्री का स्वागत करे। मेरे विचार से यह सदी स्त्री के अस्थित्व की थी, अगली शताब्दी उसके व्यक्तित्व की होगी। इस से नारी समाज का विकास होगा। साथ ही देश का विकास होगा। इस संदर्भ में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने बहुत पहले लिखा था कि

स्त्री जनों की प्यारी हिन्दी भाषा से सुधारी
सीता अनुसुइया सती अरुन्धति अनुहारि।।
शील लाज विधादि गुण लहौ सकल जग नारी।
जो नारी सोई पुरुष यामैं कछु न विभक्ति।।

संदर्भ :

१. स्त्रीत्ववादी विमर्श-समान और साहित्य
२. स्त्री आकांक्षा के मानचित्र-गीता श्री
३. शाल्मली-नासिरा शर्मा
४. साठोत्तर हिन्दी कहानी लोक
५. प्रगतीशील नारी-शांति कुमार
६. नारी वादि विमर्श-राकेश कुमार
७. समकालीन हिन्दी कथा साहित्य जन चेतना-डॉ. अरुणा लोखण्डे
८. काम काजी भारतीय नारी-प्रमीला कपूर
९. समकालीन भारतीय साहित्य-पत्रिका, २०१५
१०. आश्वस्त-पत्रिका-अंक-५-२००४, २००५, २०१६